माघ मेला
साधना का 'मिनी कुंभ'

गंगा, यमुना और सरस्वती नदी के पवित्र संगम तट प्रयागराज में माघ मास में स्नान, दान और दर्शन का विशेष महत्व है। इस दौरान यहां आयोजित होने वाला माघ मेला हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन और धार्मिक आयोजनों में से एक है। इसे 'मिनी कुंभ' भी कहा जाता है। मान्यता है कि माघ माह में पवित्र संगम में स्नान करने से मनुष्य के सभी पापों का नाश होता है और जन्म तथा मृत्यु के बंधन से छुटकारा मिलकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। यही वजह है कि इस मेले में देश ही नहीं विदेशों से भी लोग आकर पुण्य का आशीर्वाद लेते हैं। माघ मेले में कुल छह तिथियां ऐसी होती हैं, जिनमें स्नान करना अत्यंत शुभ माना जाता है।

करौली शंकर महादेव
तृतीय मठाधिपति
मिश्रीमठ, हरिद्वार

हिंदू धर्म के अनुसार माघ माह में संगम नगरी में स्नान करने से मन और कर्म की शुद्धता होती है। इसे देखते हुए संगम में माघ स्नान की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। संत, महात्माओं के टेंट लग गए हैं। आम आदमी जिन्हें कल्पवास करना है वे भी तैयारियों में जुटे हैं। श्रीरामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं (मकर संक्रांति) तब सभी देवता, दान, तीर्थ और मनुष्य तीर्थराज प्रयाग के त्रिवेणी संगम में स्नान करते हैं। मत्स्य पुराण में उल्लेख है कि माघ मास में संगम स्नान से दस हजार तीर्थों की यात्रा के बराबर पुण्य मिलता है।

श्रीहरि विष्णु को समर्पित महीना

पद्म पुराण में उल्लेख है कि माघ में पवित्र नदियों में स्नान करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं और पापों से मुक्ति मिलती है। इस माह में सूर्य उपासना का विशेष महत्व है, क्योंकि सूर्य मकर राशि में जब प्रवेश करते हैं, तो उस दिन मकर संक्रांति पर्व मनाया जाता है। माघ मास का सबसे बड़ा महत्व प्रयागराज के संगम में स्नान से जुड़ा है। क्योंकि यहीं गंगा, यमुना और अदृश्य हो चुकी सरस्वती नदी का संगम होता है। मान्यता है कि सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने यहां प्रथम यज्ञ किया था।

व्यक्तिगत शुद्धि का माध्यम भी

माघ मास और संगम स्नान हमें सादगी, तप और आध्यात्म की याद दिलाता है। यह न केवल व्यक्तिगत शुद्धि का माध्यम है, बल्कि सामाजिक समरसता का भी प्रतीक है, जहां सभी वर्ग के लोग एक साथ स्नान करते हैं। यदि संगम नहीं जा सकते हैं, तो गंगा जल घर में लाकर स्नान करना चाहिए। इस मास में हमें जीवन में संयम और भक्ति का संदेश भी मिलता है, जो मोक्ष तक ले जाता है।

कब कौन सा होगा स्नान

साल 2026 में माघ मेले की शुरुआत 3 जनवरी को पौष पूर्णिमा के दिन होकर समापन 15 फरवरी को महाशिवरात्रि के साथ होगा।

- पौष पूर्णिमा स्नान- 3 जनवरी।
- मकर संक्रांति स्नान- 14 जनवरी।
- मौनी अमावस्या स्नान - 18 जनवरी।
- वसंत पंचमी स्नान - 23 जनवरी।
- माघी पूर्णिमा स्नान - 1 फरवरी।
- महाशिवरात्रि स्नान -15 फरवरी।

सहस्र वर्षों की तपस्या का फल

माघ मास में संगम स्थान से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। संगम में प्रत्येक माघ मास में मेला लगता है। इस दौरान पौष मास की पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक लाखों श्रद्धालु संगम तट पर कल्पवास करते हैं। कल्पवासियों के लिए सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करने का विधान है। इस दौरान श्रद्धालु प्रभु के नाम का जप, हवन आदि करते हैं। मान्यता है कि कल्पवास से सहस्र वर्षों की तपस्या का फल मिलता है। माघ मेले के दौरान पौष पूर्णिमा, मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या, वसंत पंचमी, माघ पूर्णिमा और महाशिवरात्रि के दिन स्नान का विशेष महत्व है। इनमें मौनी अमावस्या का विशेष महत्व है। इस दिन मौन रहकर स्नान करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। माघ पूर्णिमा पर स्नान से अक्षय पुण्य मिलता है और देवता संगम में अवतरित होते हैं। तिल का दान और उपयोग इस मास में विशेष है, क्योंकि तिल गर्म प्रकृति का होता है।

कल्पवास 21 नियम संयम पर आधारित

पद्म पुराण में कल्पवास के मुख्य 21 नियम बताए गए हैं, जो कठोर संयम पर आधारित हैं। इनका पालन करने से चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है। नियमों में सत्य बोलना, अहिंसा का पालन, इंद्रिय संयम (ब्रह्मचर्य), क्रोध न करना, दूसरों की निंदा न करना, झूठ न बोलना, चोरी व लोभ न करना, मोह का त्याग, गंदगी न करना, भूमि पर शयन, एक समय सात्विक भोजन, मौन व्रत, दान, जप-तप और ध्यान, सूर्य को अर्घ्य, देवपूजन, सत्संग और भजन-कीर्तन, विचारों को रखना, हिंसा रहित जीवन और ब्रह्म मुहूर्त में उठना शामिल है।

पौराणिक कथा

नारियल की उत्पत्ति

हिन्दू धर्म में नारियल का विशेष धार्मिक महत्व है। लगभग हर पूजा-पाठ, यज्ञ और शुभ संस्कार में नारियल का प्रयोग अनिवार्य माना जाता है। इसे पवित्रता, पूर्णता और शुभता का प्रतीक समझा जाता है। नारियल से जुड़ी एक प्राचीन पौराणिक कथा भी प्रचलित है, जिसके अनुसार इसका पृथ्वी पर अवतरण महर्षि विश्वामित्र द्वारा कराया गया था। यह कथा प्राचीन काल के प्रतापी और धर्मनिष्ठ राजा सत्यव्रत से संबंधित है। राजा सत्यव्रत ईश्वर में गहरी आस्था रखते थे। उनके पास राज्य, वैभव और सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं थी, फिर भी उनके मन में एक विशेष इच्छा थी- वे जीवित अवस्था में पृथ्वीलोक से स्वर्गलोक जाना चाहते थे। स्वर्गलोक की अलौकिक सुंदरता उन्हें अत्यंत आकर्षित करती थी, परंतु वहां पहुंचने का मार्ग उन्हें ज्ञात नहीं था।

एक समय महर्षि विश्वामित्र तपस्या के लिए अपने आश्रम से दूर चले गए। उनकी अनुपस्थिति में क्षेत्र में अकाल पड़ गया और उनका परिवार कठिन परिस्थितियों में जीवनयापन करने लगा। इस संकट के समय राजा सत्यव्रत ने महर्षि के परिवार की सहायता की और उनकी देख-रेख का दायित्व निभाया। जब महर्षि विश्वामित्र तपस्या से लौटे, तो उन्हें अपने परिवार से राजा के इस उपकार की जानकारी मिली। कृतज्ञ होकर महर्षि विश्वामित्र राजा के दरबार पहुंचे और उन्हें वर मांगने का अवसर दिया। राजा ने विनम्रतापूर्वक अपनी इच्छा व्यक्त की कि वे स्वर्गलोक जाना चाहते हैं। राजा के उपकार को स्मरण करते हुए महर्षि ने अपने तपोबल से एक मार्ग तैयार किया, जो स्वर्गलोक की ओर जाता था। राजा उस मार्ग से स्वर्ग की ओर बढ़े, किंतु जैसे ही वे स्वर्ग के समीप पहुंचे, देवराज इन्द्र ने उन्हें वहां प्रवेश करने से रोकते हुए पृथ्वी की ओर धकेल दिया। दुखी राजा ने यह घटना महर्षि को बताई। इसके बाद देवताओं और महर्षि विश्वामित्र के बीच विचार-विमर्श हुआ और एक समाधान निकाला गया।

निर्णय हुआ कि राजा सत्यव्रत के लिए पृथ्वी और स्वर्ग के बीच एक नया स्वर्गलोक बनाया जाएगा। उसे स्थिर रखने के लिए महर्षि ने उसके नीचे एक विशाल खंभे का निर्माण किया। मान्यता है कि समय के साथ यह खंभा एक ऊंचे वृक्ष में बदल गया और राजा सत्यव्रत का सिर फल का रूप धारण कर गया। यही वृक्ष नारियल का पेड़ और वह फल नारियल कहलाया। इस कथा के अनुसार राजा सत्यव्रत न तो पूर्ण रूप से पृथ्वी के रहे और न ही स्वर्ग के, बल्कि दोनों लोकों के बीच स्थित रहे। इसी कारण नारियल को हिन्दू धर्म में अत्यंत पवित्र और पूजनीय स्थान प्राप्त है।

– फीचर डेस्क

बोधकथा

विवेक और क्रोध

बहुत समय पहले की बात है। महान दार्शनिक आदि शंकराचार्य और विद्वान मंडन मिश्र के बीच लगातार सोलह दिनों तक शास्त्रार्थ चला। यह शास्त्रार्थ केवल विद्या का नहीं, बल्कि धैर्य, विवेक और आत्मसंयम की भी परीक्षा था। इस विद्वत वाद-विवाद की निर्णायिका स्वयं मंडन मिश्र की धर्मपत्नी, विदुषी देवी भारती थीं, जिनकी बुद्धिमत्ता और निष्पक्षता सर्वविदित थी। शास्त्रार्थ अपने निर्णायक मोड़ पर था, तभी किसी आवश्यक कारण से देवी भारती को कुछ समय के लिए बाहर जाना पड़ा। जाने से पहले उन्होंने एक अनोखा उपाय किया। उन्होंने दोनों विद्वानों के गले में एक-एक पुष्पमाला डालते हुए कहा- "मेरी अनुपस्थिति में ये मालाएं ही आपकी हार-जीत का निर्णय करेंगी।"

यह कहकर वे वहां से चली गईं। उनके जाने के बाद भी शास्त्रार्थ पूर्ववत चलता रहा। कुछ समय पश्चात देवी भारती लौट आईं। उन्होंने दोनों विद्वानों को ध्यान से देखा और बिना कोई प्रश्न किए अपना निर्णय सुना दिया- आदि शंकराचार्य विजयी हुए और मंडन मिश्र पराजित। यह सुनकर सभा में उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए। कई विद्वानों को यह निर्णय असहज लगा, क्योंकि देवी भारती तो शास्त्रार्थ के बीच में ही चली गई थीं। एक विद्वान ने विनम्रतापूर्वक प्रश्न किया-"देवी, आपने अनुपस्थिति में यह निर्णय कैसे लिया?"

देवी भारती ने मुस्कुराकर जवाब दिया- "जब भी कोई विद्वान

शास्त्रार्थ में पराजित होने लगता है और उसे जब हार की झलक दिखने लगती है, तो वह इस वजह से क्रोधित हो उठता है और मेरे पति के गले की माला उनके क्रोध की ताप से सूख चुकी है, जबकि शंकराचार्य जी की माला के फूल अभी भी पहले की भांति ताजे हैं। इससे ज्ञात होता है कि शंकराचार्य की विजय हुई है।"

यह उत्तर सुनकर पूरी सभा स्तब्ध रह गई। सभी ने देवी भारती की सूक्ष्म दृष्टि, विवेक और निर्णय क्षमता की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस कथा का सार यही है कि क्रोध वह अवस्था है, जो जीत के बिल्कुल समीप पहुंचकर भी हार का द्वार खोल देती है। क्रोध केवल पराजय का कारण नहीं बनता, बल्कि संबंधों में दरार और विवेक के पतन का भी मूल कारण है। इसलिए जीवन में चाहे कैसी भी परिस्थिति आए, क्रोध को स्वयं पर हावी न होने दें- यही सच्ची विजय है।

-श्याम बिहारी शुक्ला

सप्ताह के प्रमुख व्रत

पौष पुत्रदा एकादशी

व्रत की तिथि- 30 दिसंबर
व्रत का महत्व : एकादशी के व्रत को सभी व्रतों में श्रेष्ठ माना गया। इनमें से पौष पुत्रदा एकादशी व्रत एक विशेष रखता है। यह व्रत नि :संतान दंपतियों के लिए अत्यंत ही फलदायी है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार जो व्यक्ति पौष की एकादशी के व्रत को पूरे श्रद्धा एवं विधि-विधान से करता है, उसे भगवान विष्णु की कृपा से संतान की प्राप्ति होती है। इसी कारणवश इस एकादशी को पौष पुत्रदा एकादशी के नाम से जाना जाता है।

व्रत की विधि-

- एकादशी के दिन सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करें। इसके बाद भगवान विष्णु का ध्यान करते हुए व्रत का संकल्प लें।
- व्रत का संकल्प लेने के पश्चात भगवान विष्णु की गंगाजल, तुलसी, फूल, पंचामृत, तिल से पूजा करें।
- शाम को विधि-विधान से भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा एवं आरती करें।
- व्रत के अगले दिन द्वादशी को सुबह स्नान कर व्रत का पारण करें।

आपके घर का गलत वास्तु बढ़ा सकता है एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर्स

आज के समय में वैवाहिक रिश्तों में बढ़ती दूरियां, तनाव और एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर्स केवल भावनात्मक या सामाजिक कारणों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे घर का गलत वास्तु और प्रतिकूल ग्रह-दशाएं भी बड़ी भूमिका निभाती हैं। कई बार दंपति अनजाने में ऐसे स्थान पर रहते हैं, जहां ऊर्जा असंतुलन रिश्तों में शक, झगड़े और भावनात्मक खालीपन पैदा करता है। जब वास्तु दोष और ग्रहों का प्रभाव साथ मिल जाता है, तो 'तीसरे व्यक्ति' की एंट्री के योग बढ़ जाते हैं। इस लेख में जानिए कैसे घर की दिशाएं और ग्रह संबंधों को प्रभावित करते हैं।

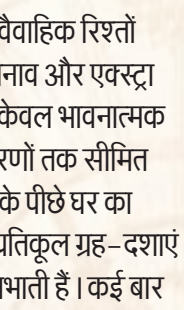

आचार्य मधुरेंद्र पांडेय
ज्योतिष एवं वास्तु एक्सपर्ट

पति-पत्नी के रिश्ते में दूरी, झगड़े और बीच में "तीसरे" का आना कई बार घर के वास्तु और ग्रह-दशा दोनों के मेल से होता है।

कैसे बिगड़ते हैं संबंध

यदि दंपति का बेडरूम दक्षिण-पूर्व (अग्नि कोण) में हो, तो स्वभाव में गर्मी, तकरार, शक और गुस्सा बढ़ता है, बात छोटी हो या बड़ी तुरंत झगड़े में बदल जाती है।

- जब बेडरूम उत्तर-पूर्व में होता है, तो भावनात्मक दूरी, ठंडापन और शारीरिक निकटता में कमी आने लगती है, जिससे पति-पत्नी एक-दूसरे से कटने लगते हैं।
- दक्षिण-पश्चिम जो रिश्तों और स्थिरता का कोना है, वहां कटाव, टॉयलेट, किचन या भारी दोष हों, तो भरोसा कमजोर होता है, असुरक्षा और अलगाव की भावना पैदा होती है।

तीसरे के आने के वास्तु कारण

- दक्षिण-पश्चिम जोन (रिलेशनशिप जोन) में टॉयलेट, गड्ढा या बहुत हल्कापन होने से वैवाहिक बंधन ढीला पड़ता है और बाहरी लोगों की दखल, यहां तक कि एक्स्ट्रा मैरिटल संबंध के योग बढ़ते माने गए हैं।
- उत्तर-पश्चिम में (रिश्तों और मूवमेंट का क्षेत्र) ज्यादा कट, अव्यवस्था या गलत निर्माण हो, तो घर के लोग बाहर की संगत में अधिक खिंचते हैं और घर से मन उखड़ सकता है।
- बेडरूम में आईना सामने से या बिस्तर को काटता हो, बिस्तर के नीचे कबाड़, या शादी की फोटो गलत जोन (जैसे SSW, ESE, WNW) में हों, तो गलतफहमियां, शक और तीसरे व्यक्ति की एंट्री की संभावना बढ़ती बताई गई है।

अवैवाहिक और ग्रह संबंध

- कुंडली में शुक्र पर राहु की पकड़, खासकर 5 वें, 7 वें, 8 वें या 12 वें भाव में और उनकी दशा-भुक्ति चल रही हो तो अनैतिक आकर्षण, गुप्त संबंध या बार-बार किसी और की ओर झुकाव के योग बन सकते हैं।
- ऐसी स्थिति में व्यक्ति को वर्तमान रिश्ता भी कम लगने लगता है, कल्पनाओं और मोह में निर्णय लेता है और यहीं से तीसरे व्यक्ति की भूमिका मजबूत होती है।

मुख्य सावधानियां बरतने की जरूरत

- कोशिश करें कि मास्टर बेडरूम दक्षिण-पश्चिम दिशा में हो, बेड सिर दक्षिण या पूर्व की ओर रहे और दोनों के लिए बेड के दोनों ओर बराबर जगह हो ताकि ऊर्जा और अधिकार संतुलित रहें।
- बेडरूम में टॉयलेट, तीखे लाल-नारंगी रंग, लगातार बंद खिड़कियां, कम रोशनी और बिस्तर के नीचे अव्यवस्था न होने दें, इससे अनावश्यक तनाव और मानसिक दबाव बढ़ता है।
- शादी की फोटो, जोड़े के गिफ्ट आदि को रिश्तों के लिए शुभ दिशा (आमतौर पर स्व, SW या पश्चिम) में साफ-सुथरे और सम्मानित स्थान पर रखें, न कि टॉयलेट, स्टोर या कचरे के पास।

आपकी कुंडली और घर की दिशा

हर व्यक्ति की कुंडली और हर घर की दिशा अलग होती है, इसलिए किस घर में कौन-सा दोष रिश्ते को कितना प्रभावित कर रहा है, यह देखने के लिए फ्लोर प्लान और दोनों की जन्म-तिथि, समय, स्थान को देखकर उसके माध्यम से ही उचित निष्कर्ष निकाला जा सकता है। अत: जब भी किसी को कभी घर या बेडरूम की नए सिरे से या दुबारा से व्यवस्थित कराना हो, तो किसी वास्तु विशेषज्ञ से सलाह लेकर ही कार्य करें ताकि घर में होने वाले वास्तु दोषों से बचा जा सकें।